International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मीरा कान्त के नाटक और स्त्री प्रश्न

डॉ.अशोक कुमार मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. कंचन
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्त्री चिंतन को परिभाषित करना चाहे तो वह घर-परिवार, समाज, नीति और राष्ट्र नीति में नारी की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकारों के लिए संघर्ष से जुड़े संवाद की संकल्पना है। वहाँ सामाजिक-धार्मिक अंधरूढ़ियों में दबी-पिसी स्त्री की आहें-कराहें ही नहीं बल्कि शोषक व्यवस्था के विरुद्ध उसका विद्रोह भी है। साथ ही औपनिवेशिक भारत में आज़ादी की लड़ाई के दौरान स्त्री चेतना का एक अलग किस्म का भव्य रूप हमारे सामने आता है। उस समय स्त्रियाँ, पुरुषों के साथ स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल हुई और अपने सामर्थ्य का भरपूर परिचय दिया। यह भूमिका इसलिए भी जरूरी थी कि न तो भारत में साहसी आत्मचेता स्त्रियों की कमी रही है और न लोहिया, राममोहन राय जैसे सत्पुरुषों की जिन्होंने स्त्रियों को रूढ़िबद्ध समाज के अंधेरे से बाहर निकलने में मदद की और स्त्री विमर्श की अवधारणा को यथार्थ का धरातल दिया।

यह सच है कि स्वतंत्र भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रियों को दिए हैं। पर यह भी सच है कि घर, परिवार और समाज में वे आज भी शोषण मुक्त नहीं हो पाई हैं। समय के बदलते तापमान में, बदलते सामाजिक संदर्भों में, अपनी अधीनस्थ भूमिका, शोषण, असमानता, से मुक्ति के प्रश्न एवं दोहरे मानदंडो के बीच अपनी बदलती सामाजिक भूमिका के बावजूद स्त्री प्रश्न नहीं बदले हैं। स्त्री-पुरुष और व्यवस्था से जुड़े स्त्री प्रश्न जटिलतर होते गए हैं। स्त्री चिंतन का सरोकार जीवन और साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रयासों से है। स्त्री की अस्मिता की लड़ाई आधी दुनिया को मनुष्य का दर्जा दिलाने की लड़ाई है। समाज और संस्कृति की नई सबसे बड़ी माँग स्त्री चिंतन के सभी पहलुओं पर मर्दवादी जोश से मुक्त होकर सोचना विचारना है | इधर स्त्री विमर्श को लेकर मोहन राकेश, भीष्म साहनी, मीरा कांत, रमेश बक्षी, स्वदेश दीपक, राजेश जैन, नंदकिशोर के नाटकों में स्त्रियों की बदलती छवि को नए आयाम दिए गए। सामंती परिवारों की जकड़न, से मुक्ति के लिए संघर्ष करती स्त्रियों को विवाह संस्था और दाम्पत्य संबंधों की विडंबनाओं पर सार्थक विमर्श के लिए वर्तमान साहित्य सामने लाता है। वर्तमान साहित्य जगत में स्त्री लेखन का विस्तार और विकास लगातार हो रहा है | महिलाओं ने अपने लेखन के बल से सामाजिक असंगतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई है | मीरा कांत ऐसी महिला लेखिकाओं के बीच एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं | उन्होंने नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य में अपना विशेष योगदान दिया है | बदलते परिवेश में स्त्री के प्रश्नों, संघर्षों, चुनौतियों, अधिकारों, शोषण एवं विद्रोह का यथार्थ चित्रण करने के साथ-साथ स्त्री अस्मिता से जुड़े गंभीर प्रश्नों पर भी मीरा कांत जी ने अपना मत प्रकट किया है | मीरा कांत ने अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को छूने का प्रयास किया है, जिसमें उनकी संवेदनशीलता का प्रदर्शन है | उनकी रचनाओं में नारी को सकारात्मकता, स्वतंत्रता और सामाजिक समर्थन का प्रतीक माना गया | संघर्षशील स्त्री और समाज के मुख्य धारा से छूटे हुए व्यक्ति उनके साहित्यिक धूरी रहे हैं | यही कारण है कि उन्होंने उपेक्षित और प्रताड़ित नारी को केंद्र में रखकर सृजन किया है|

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्त्री पुरुष का संघर्ष सिर्फ व्यक्ति के मध्य ही नहीं होता बल्कि स्त्री को अपने अस्तित्व के लिए भी पूरे समाज से संघर्ष करना पड़ता है। मीरा कांत ने अपने नाटक 'नेपथ्य राग' में अंहवादी पुरुष समाज में स्त्री की नियति को नये रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री चाहे कितनी भी उन्नति कर ले, पुरुष समाज उसे आगे बढ़ता हुआ नहीं देख सकता है और न ही उसे स्त्री की तरक्की स्वीकार है। इस नाटक में खना या किसी भी सदियों से स्त्री पर हो रहे अत्याचार को प्रस्तुत किया गया है। पुरुष समाज को स्त्री का वैदुष्य, उनकी अभिव्यक्ति स्वतंत्रता स्वीकार्य नहीं है। खना के इस चरित्र द्वारा स्त्री की इसी पीड़ा को नाटक में स्वर दिया गया है। नाटक में खना की कहानी मेधा को मेधा की माँ सुनाती है। मेधा एक आधुनिक युवती है जो अपने कार्यालय में सहकर्मियों से सहयोग न मिलने पर दुखी है। उसकी माँ उदाहरण के रूप में खना की कहानी सुनाती है। जिससे यह पता चलता है कि स्त्री और पुरुष के संघर्ष की कथा आज की नहीं बल्कि सदियों पुरानी है और इस संघर्ष में विद्रोह के स्वर कम ही सुनाई पड़ते हैं। नाटक में खना का चरित्र एक ऐसी युवती का है जो प्रतिभाशाली और अध्यसायी है। जिसे आकाश के ग्रह-नक्षत्रों, उनके संकेतों के बारे में जानने की इच्छा है। अपनी विलक्षण बुद्धि एवं जिज्ञासा के कारण उसे प्रख्यात ज्योतिषाचार्य वराह मिहिर की शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त अपने जीवन से अनेक अपेक्षाएँ हैं:

" जीवन से अपेक्षा। मेरी अपेक्षा (प्रफुल्लित स्वर में) मैं ... मैं जीवन को अवनि से अंबर तक आत्मसात् करना चाहती हैं जिससे स्थूल आकृतियों के पार देख सकूँ।.... पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक फैले गगन मंडल में कभी चमकते, कभी ठिठकते, कभी विमुख होते ग्रह नक्षत्रों व तारों का सत्व ग्रहण करना चाहती हैं। उनसे बातें करना चाहती हूँ।..... मुझे ज्योतिष की ज्योति का आशीर्वाद दीजिए गुरुवर..... जिससे सृष्टि को समझ सकूँ..... ग्रह नक्षत्रों को साक्षात् देख पाऊँ.... उनकी गति जानने-समझने में ही मेरी गति हो। ऐसा ज्ञान दें जो भय से मुक्ति दें।"1 इन पंक्तियों में खना एक ऐसी युवती के रूप में उभरती है जो अपने जीवन में ज्योतिष ज्ञान के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धि पाना चाहती है। आचार्य वराह मिहिर के सान्निध्य में वह एक बहुत बड़ी भविष्य वक्ता बनती है किन्तु समाज में उसकी क्षमता पर प्रश्न चिह्न लगाया जाता है। खना की सफलता का कारण उसके वैदुष्य को नहीं माना जाता बल्कि "आचार्य वराह मिहिर की पुत्रवधू खना ने अपने श्वसुर का बनाया हुआ कोई तैल पी लिया था.... ज्योतिषमति तैल।"2

ऐसा कहकर उसकी विद्वता को गलत सिद्ध किया जाता है। खना की भविष्यवाणी की सफलता से उसकी कीर्ति विक्रमादित्य के दरबार तक पहुँचती है जो उसे अपने दरबार में सभासद के रूप में लाना चाहते हैं। एक स्त्री को सभासद के रूप में लाया जाना पुरुष समाज (नवरत्नों) को रास नहीं आता और आचार्य वराह मिहिर भी मौन रहकर उनका साथ देते हैं। खना में क्षमता होने के बाद भी, केवल स्त्री होने कारण उसके दरबार में शामिल होने पर आपत्ति की जाती है। स्त्री की विद्वता को समाज सहज स्वीकार नहीं करता। वह चाहे आधुनिक युग की मेधा हो या पुरातन युग की खना। खना के गुरु वराह मिहिर भी इसी पुरुष समाज के अंग बनकर उसकी उन्नति को स्वीकार नहीं कर पाते और "उनका कहना है कि यदि स्त्री सभासद बने तो पहले उसकी जीभ काट ली जाए।"3 खना का यह कथन :- " (करुणा नयी मुस्कान के साथ स्वगत)..... श्रावण क्या ये तो आषाढ़ से भी पहले के मेघ हैं। बरसेंगे नहीं। आषाढ़ अभी नहीं आया... नहीं आया.... आषाढ़ आने में कई संवत्सर बीत जाएंगे... कई युग.... यह नेपथ्य है इसे मंच एक पहुंचने में समय लगेगा... कल्पांत.... कई युग.... श्रावण क्या अभी नहीं है..... पूर्वाषाढ़ है.... यह नेपथ्य है ... नेपथ्य।"4 यह नाटक स्त्रियों के मुख्यधारा में आने वाली सदियों से चली आ रही कठिनाइयों को प्रस्तुत करता है। खना का क्या हुआ यह कोई नहीं जानता। कोई कहता है कि उसने अपनी जुबान खुद काट ली या उसके गुरु ने उसकी जुबान काटी अर्थात् स्त्री-पुरुष के संघर्ष ने खना की विद्वता को नेपथ्य में ही रखा, उसे सामने नहीं आने दिया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मीरा कान्त का अन्य नाटक कंधे पर बैठा था शाप ऐतिहासिकता के आधार को ग्रहण करता हुआ समकालीन स्थितियों को संस्पर्श से आगे बढ़ता है | नाटक की कहानी का संस्कृत के दो महान कवियों कुमार दास और कालिदास के समय की प्रसिद्ध गणिका कामिनी के इर्द गिर्द बुना गया है | गणिका कामिनी सिंहलदीप के राजा कुमार दास पर आसक्त होती है | कुमार भी संस्कृत के एक श्लोक को पूरा करने की शर्त पर उसे विवाह का वचन देते हैं | श्लोक को पूरा करने के लिए कामिनी महाकवि कालिदास से सहायता मांगती हैं | कालिदास कुमार दास से मिलने के बहाने कामिनी के घर पहुंचते हैं तथा अधूरे श्लोक को पूरा करते हैं | कामिनी की माँ राजम्मा कालिदास की अप्रत्याशित सहायता से प्रसन्न तो बहुत होती है , किंतु अगले ही पल इस रहस्य के खुलने पर मिलने वाले दंड की कल्पना से आतंकित हो जाती है और निदान के रूप में वह कालिदास को विष पिला देती है | कामिनी को अपनी माँ के कृत्य पर अत्यंत ग्लानि होती है और प्रायश्चित करने के उद्देश्य से वह स्वयं भी विष पी लेती है | अपने मित्र की मृत्यु का समाचार सुनकर कुमार दास अत्यन्त दुखी होते हैं और अपराध बोध से ग्रस्त होकर स्वयं भी कालिदास एवं कामिनी की सामूहिक चिता में कूदकर अपने प्राण दे देते हैं | कारागार में बंद राजम्मा इस समाचार को सुन कर प्रश्न करती है कि दोनों कवियों की दुखद मृत्यु के लोग याद करेंगे किंतु कामिनी की चर्चा कौन करेगा |

"सुमित्रा: (घबराकर) पर यह तो गणिका धर्म के विरुद्ध हुआ
राजम्मा : धर्म अधर्म समझाएगी तुम मुझे? कौन सा धर्म? वही जो समाज में निर्बल निर्धन बालिकाओं को अपने हित के लिए गणिका बना देते हैं? और तुम्हारे माता पिता ने जो किया वह क्या था? धर्म या अधर्म?" 5

यहाँ मीरा कांत जी स्त्री के अपराधी रूप को प्रस्तुत करने की बजाय उन स्थितियों और उन कारणों को प्रस्तुत करना चाहती है, जहाँ आत्मरक्षा के लिए कोई भी व्यक्ति वही करता जो गणिका कामिनी ने किया अर्धांगिनी के रूप में स्वीकृत होने के लिए अपने स्त्रीत्व की रक्षा करने और वेश्यावृत्ति से निकलने के लिए कामिनी कुमार दास के साथ विवाह करना चाहती है| कामिनी के चरित्र के माध्यम से नाटककार ने सदियों से सामाजिक ढांचे में जमीन व्यवस्था के भीतर झांकने का प्रयास किया है |

पहले स्त्री शोषण की जो बातें घर की चार दीवारों में ही बंद रहती थी आज साहित्य की अलग-अलग विधाओं में उन बातों को स्थान मिल रहा है | मेरा कांत जी का नाटक अंत हाजिर हो वर्तमान समय के ऐसे ही सड़े गले किंतु दबे ढके यथार्थ को प्रस्तुत करने वाला नाटक है अपने नैतिक मूल्यों पर परंपरागत मान्यताओं सामाजिक व्यवस्थाओं एवं संस्कृति पर गर्व करने वाला भारतीय समाज आज ऐसी स्थितियों से गुजर रहा है जो निश्चय ही न केवल अबोध बच्चियों किशोरियों,स्त्रियों के लिए बल्कि मानवता के लिए भी खतरा साबित हो सकती हैं |पितृसत्तात्मक संवेदनाओं से शून्य मानसिकता धारण किए हुए पुरुष आज अपनी वासना से दिग्भ्रमित होकर अपने ही परिवार को शिकार बनाने में लगा है | अंत हाजिर हों उन स्थितियों का नाटक है जब घर सुरक्षित चार दीवार का प्रतीक न होकर खतरा बन जाता है | ये नाटक समस्याप्रधान नाटक है | स्त्रियां हमेशा से परिवार के साथ स्वयं को सुरक्षित महसूस करती है परंतु आज स्त्रियां अपने घर पर अपने सुरक्षित नहीं हैं | उनका रक्षक ही उनका भक्षक बन बैठा है | आधुनिक दौर में आगे बढ़ते हुए मनुष्य ने अपने नैतिक और मानवीय मूल्यों को ताक पर रखा है समकालीन दौर को आधार बनाता नाटक अंत हाजिर हों यौन शोषण जैसी गंभीर समस्या को प्रकाश में लाता है कॉलेज में पढ़ने वाले कुछ छात्र एक नाटक की तैयारी कर रहे हैं ये विद्यार्थी झूठे राजनीति का विरोध करने वाले और अन्याय के खिलाफ़ आवाज उठाने वाले युवक हैं पुरुष पात्रो में मुख्य भूमिका पापा की हैं क्योंकि पापा पात्र के माध्यम से ही समस्या को प्रस्तुत किया गया है | पापा शिल्पा के पिता हैं जिनकी तीन बेटियां हैं वह अशिक्षित नहीं अपितु समाज को दिशा और दृष्टि देने वाले प्राध्यापक हैं लेकिन स्त्रियों के प्रति ऐसे बुद्धिजीवी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की सोच भी आदिपुरूष से ज्यादा नहीं जिसके लिए स्त्री केवल भोग की वस्तु है | विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होने पर भी वह आदिम कुंठा से ग्रस्त हैं और पुत्र की चाह में इस कदर हैवान बन जाता है की अपनी पत्नी के देहांत के बाद बेटी का ही यौन शोषण करने लगता है |

पापा :"साली क्या जिंदगी है हमारी भी यार. बीज बो उसे सीखते रहो सालों….. पालों पोसो…. जब लहलहाने लगे तो किसी और की नजर कर दो ! तुम भी तो भुगत रहे हो तुम्हारी ऐसी खूबसूरत जवान बेटे को ले जाने की वो साला तुम्हारा प्रोस्पेक्टिव दामाद कीमत चाहता है | कम न ज्यादा…. दस लाख! साला…. पाले हम फल खाएं दूसरे! ओह इस घुटन में तो नशा भी नहीं ठहरता…… चलो….. चलो छत पर चलते हैं हवा में "6

यह नाटक महानगरीय परिवार के रिश्तों की दलदल में प्रवेश करवाता है, पर बलात्कार के मामले आज के समय में चिंता का विषय है मीरा कांत जी ने उसी को आधार बनाकर रिश्तों की मर्यादा पर सवाल खड़े किए हैं | आज अखबार में तेजी से घरेलू हिंसा की खबर अपनी जगह बनाती जा रही है | पुलिस एवं एक गैर सरकारी संस्था का संयुक्त रूप से किया गया सर्वेक्षण बताता है कि घर में बच्चियों व किशोरियां सुरक्षित नहीं है आंकड़े बताते हैं कि आठ में से एक महिला घर के ही सदस्यों द्वारा शोषित होती है | वस्तुतः मीराकांत का यह नाटक बलात्कार की कथा नहीं रिश्तों की अमानवीयता की कथा है, विश्वासघात की कथा है|

उत्तर प्रश्न मीराकांत जी का एक सचेत बुद्धिमान स्त्री द्वारा प्रस्तुत एक प्रश्न वाचक नाटक है | यह नाटक स्त्री की समस्याओं संघर्षों प्रश्नों को सामाजिक राजनीतिक स्तर पर स्वर देकर स्त्री अधिकारों की मांग करता है मीराकांत जी ने इस नाटक में जीवंत और सबल स्त्री पात्रो को प्रस्तुत किया है | नाटक की नायिका यशोवती सचेत, स्वाभिमानी एवं सक्षम स्त्री है , जो सत्ता को संभालने की योग्यता रखती है | लेखिका अपने नाटक की भूमिका में स्पष्ट किया है कि "नाटक में महारानी यशोवती अपने शासन की अल्पावधि में ही राजधर्म को पुरुष सत्ता को शोषणकारी दमन चक्र से मुक्त करने का साहस दिखाती है | राजस्व अधिकारी व सामान्त समरसेन के माध्यम से वह समाज व संबंधों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रहार करती है| सामंती मूल्यों के स्थान पर जनतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि ठहराती है| इसी मोड़ पर आकर वह स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए व्यवस्था में व्याप्त उन मूल्यों को चुनौती देती है, जो रेशमी परदों की आड़ में स्त्री की संभावनाओं को पददलित करते हैं |"

मीराकांत जी का उत्तर प्रश्न नाटक कल्हण कृत प्रसिद्ध रचना राजतरंगिणी में से संक्षिप्त घटनाक्रम को आधार बनाकर रचा गया है | यह नाटक कश्मीर की पहली महिला शासक यशोवती की कहानी है | जो गोनन्द वंश की पुत्रवधू थी | इस वंश के महाराज गोनंद ने जरासंध के अनुरोध पर मथुरा पर आक्रमण कर वहाँ उथल पुथल मचा दी थी | उस युद्ध में यादव सेना को बुरी तरह हारता देख उसकी रक्षा के लिए बलराम ने आकर गोनंद को घेर लिया और बलराम की गदा के प्रहार से गोनंद ने अपने प्राण त्यागे | अपने पिता के वध का प्रतिशोध लेने की उभावना गोनंद के पुत्र कश्मीर नरेश दामोदर के भीतर बसी थी |उसी समय गांधार देश के नरेश ने अपनी पुत्री के स्वयंवर का आयोजन किया, जिसमें यदुवंशी भी आमंत्रित थे| स्वयंवर में जाकर दामोदर ने यदुवंशियों को युद्ध के लिए ललकारा | अंत में कृष्ण के सुदर्शन चक्र से कश्मीर नरेश दामोदर की हत्या हुई | भगवान कृष्ण ने ही स्वयं दामोदर की गर्भवती पत्नी यशोवती का राज्याभिषेक करवा दिया | यशोवती के राज्याभिषेक के अवसर पर कृष्ण के मंत्रिमंडल के सदस्यों ने आपत्ति प्रकट की, जिसे कृष्ण ने शीघ्र ही शांत भी कर दिया | यशोवती ने कश्मीर का कार्यभार सम्भाला और शिशु को जन्म दिया |

इस नाटक में एक ऐसी राजव्यवस्था का वर्णन है जो प्रजातांत्रिक मूल्यों की हत्या व्यवस्था मैं भ्रष्ट मूल्यों का प्रसार करती है | इस शोषण के विरुद्ध यशोवती का विद्रोह नाटक को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ले कर आता है | यशोवती में किसी सत्ता को पाने का लालच नहीं बल्कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का साहस है |

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लेखिका यशोवती के माध्यम से स्त्री शक्ति व अधिकारों की लोकतांत्रिक मांग करती है | यशोवती स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए व्यवस्था में व्याप्त उन मूल्यों को चुनौती देती है जो पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की क्षमताओं ,वैचारिकता ,स्त्रीवादी चेतना को अनदेखा- अनसुना करते हुए राज़ सत्ता संभालने के अयोग्य समझते हैं | यशोवती निर्णय करती है कि वह शशक के रूप में तब तक पद त्याग नहीं करेगी जब तक अपने पुत्र को वे मूल्य व संस्कार न दें जो स्त्री शक्ति की संभावना के पक्षधर हो | यह नाटक आज समाज में स्त्री को उसकी रूढ़िवादी निर्धारित भूमिका में रख कर गरिमा मंडित करने वालों के षडयंत्र की पोल खोलता है |उत्तर प्रश्न नाटक वस्तुतः आधुनिक युग का प्रासंगिक प्रश्न हैं ऐसा प्रश्न जिससे स्त्री आज भी जूझ रही है |

मीरा कांत के नाटकों के विषय स्त्री जीवन से संबंधित हैं | उन्होंने आधुनिक स्त्री जीवन को प्रामाणिक ,ऐतिहासिक, आधुनिक चरित्रों के माध्यम से प्रस्फुटित किया है | उदारीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री विमर्श को अपने नए सोच के कारगर औजार तलाशने होंगे। पुराने औजार लिएर स्त्री चलने वाला नहीं है। आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वीडियो, आजारों से काम बिछाकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों से, जहाँ हमें पूरी दुनिया से जोड़ दिया वहीं उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढ़ावा दिया। मूल्यों और रिश्तों पर बाजार हावी हो गया। देश में जहाँ बदलाव का दौर पूरे वेग से शुरू हो गया, वहीं स्त्री अस्मिता और स्त्री स्वातंत्र्य को लेकर गलतफहमियाँ भी फैलती गई | इसके बावजूद साहित्य में स्त्री की यह संघर्ष यात्रा जारी रही। मीरा कान्त जी ने साहित्य में जहाँ एक ओर भोगवादी तंत्र में वस्तु बनती स्त्री की चेतना को आत्मशोधन के लिए चेताया, तो दूसरी ओर सांप्रदायिक उन्माद और आंतकवाद की परिणतियों से जूझती स्त्री की व्यथा और संघर्ष को अपने नाटकों में लिपिबद्ध किया।

संदर्भ सूची

1.'नेपथ्य राग' पृष्ठ संख्या 16-17
2. वही, पृ०सं० 42
3. वही, पृ०सं० 61
4. वही, पृ०सं० 61
5. कंधे पर बैठा था सांप, पृष्ठ संख्या 46-47
6. अंत हाजिर हो, पृष्ठ संख्या 65
7. भूमिका, उत्तर प्रश्न